# स्क्रीन सेवर

**श्री पी०के०मजुमदार**
**वैज्ञानिक " ई"**

बिल गेट शायद अस्सी और नब्बे के दशक का भगवान था, जिसने विंडौस (WINDOWS) के जरिये ऐसे-ऐसे कारनामें कर दिखाये जो पहले लोगों को नामुमकिन सा लगता था। खासकर इतनी सारी फाइलों पर एक साथ काम करना DOS के जमाने में अजूबा था। अब खिड़कियाँ (WINDOWS) खोलते जाइये और एक साथ कई क्षेत्रों में हाथ आजमाते जाइये। है न मज़े की बात ! मगर सबसे अनूठी एवं मनमोहक विशेषता अगर कोई है तो वो है स्क्रीन सेवर की। बैठे आँखों के सामने एक पल में वो नजारा ले आईये जिसके आप चाहक हैं। निश्चय ही WINDOWS में यह सुविधा आज सबसे ज्यादा लोकप्रिय और उपयोगी सिद्ध हो रही है। इसकी लोकप्रियता में अगर किसी बात की अहम् भूमिका है तो वो है हमारी सोच की सामन्जस्यता। विश्वास कीजिए या न कीजिए परन्तु स्क्रीन सेवर का मानव प्रवृत्ति के साथ अनूठा मेल है। इसलिये साधरणतया सभी इसका उपयोग करने में आनन्द का अनुभव करते हैं। आइये देखे कैसे ?

मानव जितना उन्नति करता गया उतना ही अपने आपमें आलसी और आरामप्रिय होता गया। एक तरफ तकनीकी विकास होता रहा तो दूसरी तरफ उसने अपने मस्तिष्क को उन्नतशील मानते हुये उसका उपयोग करना एवं सही दिशा में परिश्रम करना छोड़ दिया। अब दौर कुछ ऐसा आ गया कि समस्यायें हमारी और हल किसी और का। सिर्फ आँकड़े एकत्रित करते जाइये और किसी ओर के सूत्रों में पिरो दीजिये। दिमाग का उपयोग किये बिना ही उत्तर आपके सामने होगा। फिर खाली दिमाग शैतान का घर न हो तो क्या हो ? लेकिन दिखाने के लिये कोई मुखौटा तो चाहिये। तो उपयोग में आ गया स्क्रीन सेवर। पता नहीं मुर्गी पहले आई या अंडा परन्तु WINDOWS के वैज्ञानिकों और तकनीकीविदों ने मानव मन की इस पराकाष्ठा को खूब पहचाना और उसे इस आपरेटिंग सिस्टम का अंग बना दिया। हमने तहेदिल से उसका स्वागत किया, उसे खूब सराहा, घण्टों उसकी ओर टकटकी बांधे देखते रहे और निजी जिंदगी में उसके उपयोग के अवसर ढूँढने लगे। आइये अब हम इसकी उपयोगिता पर ध्यान देते हैं।

भौतिकवाद से पीड़ित इस दुनिया में स्क्रीन सेवर की जरूरत किसे नहीं पड़ती। स्कूल में बच्चे की शिक्षिका से सिर्फ अच्छे संबंध बनाना ही काफी नहीं है घर पर स्क्रीन सेवर पर बच्चे के होनहार होने का बड़ा चढ़ाकर बखान करना भी उतना ही आवश्यक है। संस्थान में भ्रष्टाचार करके भी कुछ नहीं बिगड़ पायेगा जब तक स्क्रीन सेवर पर आपके कर्मठ, निष्ठावान, सुशील, ईमानदार और निष्पक्ष होने का दृश्य बारबार उजागर होता रहेगा। इसके विपरीत ईमानदार एवं सक्षम कर्मचारी के साथ अन्याय करना इतना आसान नहीं जब तक बार-बार स्क्रीन सेवर पर उनके भ्रष्टचारी एवं बददिमाग होने का दुष्प्रचार न किया जाय। यहाँ तक कि बड़े बूढ़े लोगों से मुक्ति पाने पर आप कितना भी खुश क्यों न हो ले लेकिन स्क्रीन सेवर पर अपने दुःखी होने का रोना तो बार-बार रो सकते है। क्यों न हो हम क्या हैं, इसकी क्या कीमत, आप क्या सोचते हैं, हमें उसकी ताकीद करनी है। है न स्क्रीन सेवर का कमाल।

आइये अब अंत में मानव और मशीन में कहाँ अंतर आ गया उसका उदाहरण देखें। अभी हाल ही में मैं अपने एक मित्र के ऑफिस गया हुआ था। कम्प्यूटर के पर्दे पर करिश्मा कपूर की लगभग सारी अदायें एक

के बाद एक आलोकित हो रही थी । हमें भी मजा आया तो हम भी कुछ देर उन दृश्यों को निहारते रहे । थोड़ी देर बाद हमसे रहा न गया और हमने आदत से मजबूर उनसे पूछ ही लिया क्या आप सारे दिन यही करते हो ? मित्र पहले तो थोड़े से अचकचाये, चरित्र के स्क्रीन सेवर का मामला था । फिर उन्होंने भी हाजिर जवाबी का परिचय दिया और उत्तर दिया, मैं यह करता नहीं हूँ सिर्फ देखता हूँ और कुछ करने के लिये अपने दिमाग को तरोताजा करता हूँ । इतना कहकर उन्होंने स्क्रीन सेवर को लुप्त किया और मैने पाया कि Internet पर उनके कुछ महत्वपूर्ण कार्य चल रहे थे । लज्जित तो मैं थोड़ा सा हुआ लेकिन मन में अचानक विचार कौंधा कि क्या अपनी निजी जिंदगी में भी हम स्क्रीन सेवर का उपयोग इसीलिए किया करते हैं ? असहाय मन ने उत्तर दिया नहीं । हम यहां देखने के लिये नहीं वरन दिखाने के लिये स्क्रीन सेवर का उपयोग करते हैं । करते हम वही हैं जो हमारे संस्कार हैं । क्या इसे भी कोई खरीद पाया है आज तक ? आइये यहाँ आकर स्क्रीन सेवर को फिर यथास्थिति स्थापित कर देते हैं । यही मानव जीवन की विडंबना है।